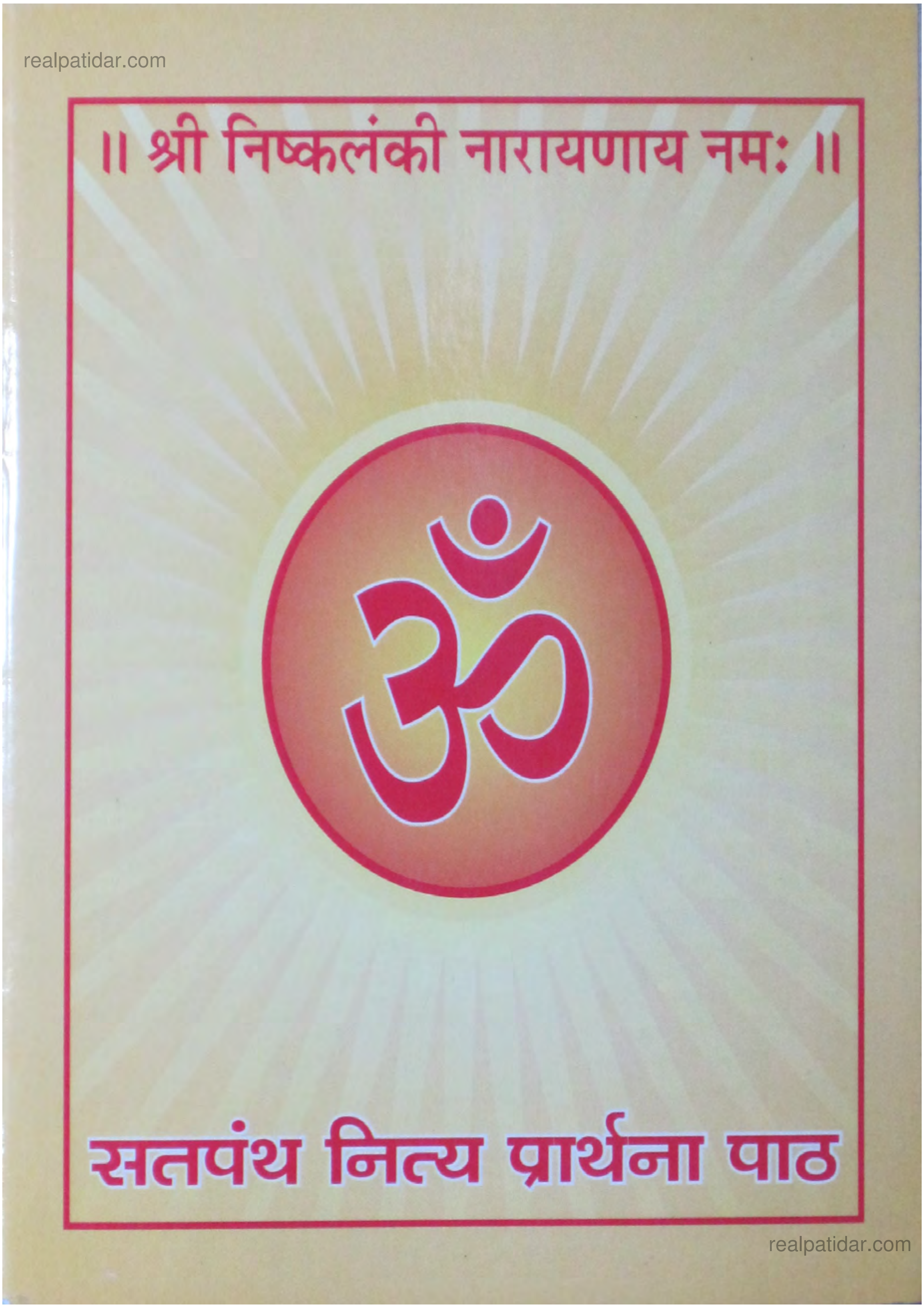
॥ श्री निष्कलंकी नारायणाय नमः ॥

सतपंथ नित्य प्रार्थना पाठ



॥ श्री निष्कलंकी नारायणाय नमः ॥

ॐ

सतपंथ नित्य प्रार्थना पाठ



प.पू. आध जगद्गुरु
श्री करशनदासजी महाराज
सतपंथ प्रेरणापीठ, पीराणा.



प.पू. जगद्गुरु
श्री नानकदासजी महाराज
सतपंथ प्रेरणापीठ, पीराणा.

॥ श्री निष्कलंकी नारायणाय नमः ॥

ॐ

सतपंथ नित्य प्रार्थना पाठ

जगद्गुरु सतपंथाचार्य श्री नानकदासजी महाराज

सतपंथ प्रेरणापीठ, मु. पीराणा, ता. दसक्रोई,

जि. अहमदाबाद-३८२४२५.

दूरभाष : (०२७१८)

२८८२२७, २८८२२९, २८८८१२

जगद्‌गुरुश्री के (दो शब्द) अमृत वचन

प्रिय सतपंथी सज्जनो,

ये पुस्तिका प्रकाशित करनेका मुख्य उद्देश य है कि परम कृपालु परमात्माने अपने को वायु, पानी, आकाश, पृथ्वी और अग्नि जैसे अमूल्य तत्त्व, जीवमात्रको विना मूल्य दिया है। इसके हम मानव मात्र ऋणी है, हमे यह अमूल्य मानवदेह मिली है तो ये पुस्तिका में बताये गई प्रार्थनाएँ और मंत्रो के द्वारा नित्य प्रभुको वंदन करके शक्ति प्राप्त (प्रदान) करके ऋण से मुक्त होकर अपना ये मनुष्य जीवन धन्य बनाकर मानव देह का यह जन्म (अवतार) सफल बनायें। ऐसी अंतःकरणपूर्वक शुभेच्छा प्रदान करता हूँ।

लि.

जगद्‌गुरु श्री नानकदासजी महाराज

के शुभ आशिष

सतपंथ प्रेरणापीठ पीराणा

प्रकाशक : सतपंथ प्रकाशन समिति

सतपंथ प्रेरणापीठ पीराणा, ता. दस्क्रोई,

जि. अहमदाबाद-३८२ ४२५.

• सतपंथ का स्वरुप •

(१) दृढ निश्चय (२) प्रतिज्ञा (३) नियम

(१) दृढ निश्चय : सत्य, पुरुषार्थ, प्रेम, समानभाव, अहिंसा, परोपकार, क्षमा.

यह सभी तत्त्वों का दृढतापूर्वक पालन करें ।

(अ) सत्य : वाणी और आचरणमें हमेशा सत्य निष्कपट वृत्ति और मृदुभाषी बने ।

(आ)पुरुषार्थ : धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ।

(१) धर्म : वेदोक्त मार्ग का यथाशक्ति आचरण करें ।

(२) अर्थ : स्वाश्रय और प्रमाणिकता से धनोपार्जन करें । यह सात्त्विक संपत्ति है । अन्याय, अपराध और अन्य बुरे कार्य से प्राप्त कि हुई संपत्तिका उपभोग करनेवाला व्यक्ति हीन होता है । इसलिये न्याय और नीति से धन प्राप्त करना चाहिये ।

(३) काम : विषय वासना और क्षणिक उपयोगमें प्रवृत्त न रहे । वासनाओं पर संयम रखें । इन्द्रियों को नियंत्रित रखें ।

(४) मोक्ष : वेदोक्त मुक्ति मार्ग की साधनानुसार आचरण करके, मुक्ति का अंतिम ध्येय प्राप्त करने में प्रयत्नशील रहें । ऐसा व्यवहार करने से ही मानव जन्म की सार्थकता होगी । अन्यथा मानव और पशुमें कोई अंतर ही न होगा ।

(इ) **प्रेम :** यह संसार में मानव मात्र समान है। इसलिये प्रत्येक (हरेक) के साथ मन, वचन और कर्म से विनम्र होकर प्रेम-स्नेह से व्यवहार करना चाहिये। प्रेमसे करुणा जागृत होती है, और करुणा ही दया का पर्यायीभाव है, जो धर्म का मूल तत्त्व भी है।

(उ) **समानभाव :** मानवमात्र के अंतर में एक ही आत्मा है। अैसा आत्मभाव रखना चाहिये। हम सब एक ही इश्वरकी संतान है। कोई छोटा नहीं, कोई बडा नहीं। यह विशाल दृष्टि रखकर सबके साथ बंधुत्त्व भावसे रहना चाहियें।

(ऊ) **अहिंसा :** सत्पंथ मार्ग में अहिंसा एक महान तत्त्व है। पशु-पक्षी और अन्य प्राणीको मारने से हिंसा होती है। इतना ही नहीं, 'मार' कहने से या किसीकी भावनाओं का खंडन करने पर भी हिंसा होती है और नैतिक अध:पतन होता है।

(ए) **परोपकार :** सन्मार्ग पर चलनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को सहायता करने के लिये हंमेशा तत्पर रहना चाहिये। शुद्ध भावना और निष्काम वृत्ति से दु:खी जनोंकी सेवा करना और मानव कल्याण की भावना रखनी चाहिये। सत्पुरुषो की सेवा करना अपना पर कर्तव्य समझना।

(ऐ) **क्षमा :** 'क्षमा वीरस्य भूषणम्:' यह उक्ति स्मरण में

रखते हुये शत्रुको या कष्ट पीडा पहुंचाने वाले को भी क्षमा करना शुभ लक्षण है ।

(२) प्रतिज्ञा :

(अ) सतपंथ में निर्देश की गई सभी प्रतिज्ञा का अक्षरशः पालन करना । सद्‌गुरु श्री इमामशाहने व्यवहार में कर्तव्यपालन और धर्म कार्यमें कैसा आचरण रखना चाहिये, इस संबंधमें जो नियम-पालन का निर्देश किया है, उसका अनुसरण करना ।

(आ) बालकों को सतपंथ की शिक्षा (शिक्षापत्री) एवं उपदेश को ज्ञात ध्यान रखकर अपने संतानोको धर्मका शिक्षण देना अति आवश्यक है। जिससे धार्मिक संस्कृति संरक्षित रहेगी।

(इ) धार्मिक बातोमें चमत्कार या अंधश्रद्धाको दूर करके ज्ञान दृष्टि का ही अवलंबन करना चाहिये । जिससे अज्ञानता का भय दूर होगा। वेद, उपनिषदो, सदग्रन्थों (सत्‌शास्त्रो) और गुरुवचन पर दृढश्रद्धा एवं विश्वास रखना परम कर्तव्य है।

(३) नियम : (अ) शरीर शुद्धि (आ) अंतरशुद्धि (इ) व्रत (ई) उपासना (उ) ध्येय

(अ) शरीरशुद्धि : लाइ सुतक याने छुआछूत (वृद्धिजनन शौच) स्त्रीको प्रसूता होने के बाद सवामास याने ४० दिन और गोत्र जनोको ११ दिन तक सूतक याने स्पर्शा-स्पर्श का पालन करना चाहिये । मृत्यु-सूतक गोत्रजनो

को ११ दिन तक रखना चाहिए। रजस्वला स्त्री ४ दिन तक किसी भी चीज का स्पर्श न करें। स्नान शौचादि विषय में शाखानुसार आचरण करें। सद्गुरु वचनानुसार तीर्थ मंत्रोपचारादि से शुद्ध बने।

(आ) अंतरशुद्धिः मादक एवं नशीले पदार्थ याने लहसुण, प्याज, हिंग, तम्बाकु, अफीण, भंग, गांजा, ताडी, मांस-मदिरा जैसी निषेद चीजोंका सेवन न करें। क्योंकि ऐसे पदार्थों का सेवन करने से शरीर को हानी पहूंचती है। प्रभु भजन करनेसे परावृत हो सकते है।

सूद, सवाई सूद और परस्त्री गमन-चिंतन से भी मनुष्य में हीनता आती है, आत्मा की शक्ति लुप्त हो जाती है। और आसुरी वृति बढती है। यह महापाप से मनुष्य का अधःपतन होता है। इस लिये शास्त्रों में निषेध माने गये पदार्थों का त्याग करके सात्त्विक अन्न और पदार्थों का सेवन करें। इसके एक स्वरुप आत्मा एवं हृदय की शुद्धि होती है। मन-अंतर प्रभु स्मरण में तल्लीन रहता है। और दैवी संपत्ति का आविर्भाव होता है।

(इ) व्रतः युग धर्मानुसार प्रत्येक मासकी शुकल द्वितिया और शुक्रवार के दिन जो द्वितिया आती है, जिसको थावर द्वितिया का महाव्रत कहते है, उस दिन व्रत रखें।

दशवंत, सुक्रित, पुण्यतिथी, श्रद्धा, उत्तरकार्य, पिंडश्राद्ध

आदि सतपंथ की पूजाविधि अनुसार करें ।
महाशिवरात्री, रामनवमी, गोकुलाष्टमी, गुरुपूर्णिमा, दुर्गापूजा (नवरात्री), गणेशचतुर्थी, दीपावली, एकादशी, चौदस, अमावस्या आदि तिथि-त्यौहारों का व्रत रखें ।

(ई) **उपासना :** प्रतिदिन चतुष्ट संध्या अवश्य करें ।
(१) प्रातः सूर्योदयसे पहले, (२) मध्याह्न बारह बजे, (३) सूर्यास्त समय, (४) मध्यरात्री.
ॐ प्रणव मंत्र का ध्यान-चिंतन करना और सतपंथ के वचानानुसार वरुणदेव, वारियज्ञ घटपाट पूजा करें ।

(उ) **ध्येय :** कलियुग के अंतमें प्रगट होने वाले दशमा अवतार आद्य विष्णु श्री निष्कलंकी नारायण और आद्यशक्ति माता और प्रणव मंत्र "ॐ" आराध्य देव मानना ।

श्री गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य ।
धीमहि धियो योनः प्रचोययात ॥

श्री निष्कलंकी नारायण गायत्री मंत्र

ॐ नमो श्री निष्कलंकी नारायण जनार्दनाय ।
भस्मा युधाय विद् महे दिव्य नैत्राय धिमही ॥
तन्नो ज्वरहरः प्रचोदयात, तन्नो ज्वरहरः प्रचोदयात ।
ॐ शांतिः । शांतिः । शांतिः ॥

गुरु वंदना

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णुः, गुरु देवो महेश्वरः ।
गुरु साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥
ध्यान मूलम् गुरुमूर्ति, पूजा मूलम् गुरु पदम् ।
मंत्र मूलम् गुरु वाक्य, मोक्ष मूलम् गुरु कृपा ॥
ब्रह्मानन्दं परम सुखदं, केवलं ज्ञानमूर्तिम् ।
द्वन्द्वातीतं गगनसदशं, तत्त्वमस्यादि लक्षम् ॥
एकं नित्यं विमलमचलं, सर्वधी साक्षीभूतं ।
भावातीतं त्रिगुणरहितं, सद्गुरुं तं नमामि ॥
यदा यदा ही धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युस्थानम् धर्मस्य, तदात्मानम् सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधुनाम्, विनाशाय च दुष्कृतम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय, संभवामि युगे युगे ॥
पद वंदन करुं गुरुदेवनां, जे सकल गुण चतुर सुजाण,
पुरण ब्रह्म द्रष्टे करी, अचल पुरुष पुराण.
पूजन करुं गुरु पदनु, जेथी चौदे लोक पूजाय,
शेष ब्रह्मा शक्ति मळी, गुण गुरुजीना गाय.
कृपा होय जो गुरुदेवनी, तो टळे चोर्यासीना ताप,
जन्म मरणनी आपदा, छूटे आपोआप.

• कर दर्शनम् •

कराग्रे वसते लक्ष्मी: करमध्ये सरस्वती ।

करमूले तु गोविंद: प्रभाते करदर्शनम् ॥

हस्त के अग्र भागमें लक्ष्मी का निवास है । हस्त के मध्य भागमें प्रभु गोविंद, हस्त के मूल देवी सरस्वती का वास है । जिसका प्रात: समय दर्शन करना चाहिये ।

• पृथ्वी (वसुधा) वंदन •

समुद्र वसते देवि, पर्वतस्तन मण्डले ।

विष्णुपति वहिनी नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥

समुद्र रुपी वस्त्र धारण करनेवाली, पर्वतरुपी स्तनवाली, हे विष्णु पत्नि ! हे मा वसुधा, मैं तुझे प्रणाम करता हूँ । आपको मेरे पाँव का स्पर्श होता है, इस लिये मुझे क्षमा करें ।

• श्री विष्णु स्तुतिः •

शान्ताकारं भुजगशयनम्, पद्मनाभम् सुरेशम् ।
विश्वाधारम् गगनसदर्शम्, मेघवर्णम् सुभांगम् ।
लक्ष्मीकान्तम् कमलनयनम्, योगभिर्ध्यान गम्यम् ।
वंदे विष्णु भवभय हरम्, सर्व लोकैक नाथम् ॥

• श्री नारायण स्तुति •

नारायण निराकारम् नर वीरं नरोत्तमम् ।
नृसिंहं नागनाथं च, तं वंदे नरकांतकम् ॥

निराकार, शूरवीर, नरोत्तम, नृसिंह भगवान, कालिय नागको नाथनेवाले और नरक का अंत लानेवाले नारायण प्रभु को मैं नमस्कार करता हूँ ।

• (उगते) प्रातः सूर्य नारायण का मंत्र •

ॐ परम् कृपालु परमात्माकी कृपासे प्रारंभ करता हूँ । ॐ नमो श्री सद्‌गुरु पात्र ब्रह्मा इन्द्र इमामशाह आद्य विष्णु निरंजन निष्कलंकी नारायण आपकी आशिषसे... उगता सूरज, अस्ताचल भाण ॥ नर बीज वह श्री निष्कलंकी नारायण ॥ आप सत्य के प्रेरक-धारक रक्षणहार । पढते गोर गायत्री जप-तपसे बिंब उपाया । तब हे ! सूर्यदेव आपके चरणमें हम आयें । स्वामी ! आप निरंजन निराकार । धर्म कारण लिया अवतार । इतनी जो प्रार्थना नित्य करें वह नरक में न जाय ।

सद्‌गुरु इमामशाह महाराज

ॐ श्री निष्कलंकी नारायण को नमो नमः ॥

• दीपक ज्योतिको नमस्कार करने का मंत्र •

ॐ परम कृपालु परमात्माकी कृपासे प्रारंभ करता हूँ ।

ॐ नमो श्री सद्‌गुरु पात्र ब्रह्मा इन्द्र इमामशाह ॥

गुरु दिया, गुरु देवता, गुरु बिना घोर अंधेरा । गुरु बिना युक्ति नहीं, गुरु बिना मुक्ति नहीं । मन ताला, गुरु मंत्र चावी, खोल दो धर्मद्वार । देखो नारायण का रुप । तरें भवसागर पार । जले ज्योत भागे छूत ।

सद्‌गुरु इमामशाह महाराज

ॐ श्री निष्कलंकी नारायण को नमो नमः

• धूप करनेका मंत्र •

ॐ परम कृपालु परमात्माकी कृपासे प्रारंभ करता हूं ।

ॐ नमो श्री सद्‌गुरु पात्र ब्रह्मा इन्द्र इमामशाह ॥

आद्य-विष्णु निरंजन निष्कलंकी नारायण आपकी आशिष से..

धूप जले, अगर जले, भव का कष्ट टले । देव जागे, दैत्य भागे । जहाँ धूप, वहाँ रुप, जहाँ देव वहाँ पूजा । अलख निरंजन निराकार हमारा देव नहीं दूजा...।

सद्‌गुरु इमामशाह महाराज

ॐ श्री निष्कलंकी नारायण को नमो नमः

• सर्व देव ऋषिवरको नमस्कार करने का मंत्र •

ॐ परम कृपालु परमात्माकी कृपासे प्रारंभ करता हूं । ॐ नमो श्री सद्‌गुरु पात्र ब्रह्मा इन्द्र इमामशाह ॥ आद्य-विष्णु निरंजन निष्कलंकी नारायण आपकी आशिष से... आद्य नारायण को नमस्कार। ब्रह्मा, विष्णु, महेश को नमस्कार, आद्य शक्ति को नमस्कार । श्री निष्कलंकी नारायण को नमस्कार। प्रथम पुरुष को नमस्कार। हरिवंश कुलके समग्र परिवारको नमस्कार । धरती आसमानको नमस्कार । पवन-पाणीको नमस्कार। चंद्र सूर्य को नमस्कार । नवलख ताराओं को नमस्कार । बारह मेघ को नमस्कार । नवकुल नाग को नमस्कार । सात समुद्र को नमस्कार । नौसो नव्वाणु नदियों को नमस्कार। ग्यारह रुद्र को नमस्कार। बारह आदित्य को नमस्कार । आठ वसु को नमस्कार । अश्विनीकुमार को नमस्कार। उन्चास मरुतों को नमस्कार। चौदह ब्रह्मांडो को

नमस्कार । नवग्रह को नमस्कार । सात वार सत्ताइस नक्षत्रों को नमस्कार । पंद्रह तीथि, बारह करणों को नमस्कार । गणपति देव को नमस्कार । हनुमान जती को नमस्कार । सप्त द्विप को नमस्कार । नवखंड पृथ्वी को नमस्कार । चौवीस मुल्क को नमस्कार । अष्टकुल पर्वतों को नमस्कार । अढारह भार वनस्पति को नमस्कार । चार वेदो को नमस्कार । चार खाण चार बाण को नमस्कार । अग्नि, तेज, अन्नदेव को नमस्कार । पितृदेव को नमस्कार । आदि अंत और मध्याह्न के देवों को नमस्कार । उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम को नमस्कार । दश दिगपाल को नमस्कार । दशे दिशाओं को नमस्कार । नवनाथ चोर्यासी सिद्ध को नमस्कार । चौसठ लाख देवीओं को नमस्कार । इठ्यासी सहस्त्र ऋषियों को नमस्कार । एक लाख अस्सी हजार संत-महात्माओं को नमस्कार । अडसठ तीर्थों को नमस्कार । नन्यानवे कोटि झांखा

को नमस्कार। छप्पन कोटि मेघा को नमस्कार। बत्तीस कोटि कीन्नरों को नमस्कार। पांच कोटि प्रहलाद को नमस्कार। सात कोटि हरिश्चंद्र को नमस्कार। नव कोटि युधिष्ठिर को नमस्कार। बार कोटि कमला कुंवर को नमस्कार। तेत्तीस कोटि देवों को नमस्कार। सर्व ऋषिवर गत गंगा को नमस्कार। दश अवतारों को नमस्कार। मुखी सेवक को नमस्कार। चौद भुवन के देव-ऋषिवर को नमस्कार।। करण कल्पके अनंतकोटि देवों को नमस्कार। स्वामी ! हमारे अपराधोंको क्षमा करो। सतपंथके मार्गमें रखों। चोर्यासी के फेरे मिटाओं। तेतीस कोटिके मिलाप प्रदान करों। जांबुद्विपके धणी ॥

सद्‌गुरु इमामशाह महाराज

ॐ श्री निष्कलंकी नारायण को नमो नमः ॥

• अक्षयपात्र थाल का मंत्र •

ॐ परम कृपालु परमात्माकी कृपासे प्रारंभ करता हूं ।

ॐ नमो श्री सद्‌गुरु पात्र ब्रह्मा इन्द्र इमामशाह ॥

आद्य विष्णु निरंजन निष्कलंकी नारायण आपकी आशिषसे...

हरिचंद्र, चतुर वेदी ब्रह्मा, मोक्ष दातार देव महेश्वर और सहदेव तपेश्वर कलश किरतार । चारों युगों के जीवों का उद्धार किया । पाँच, सात, नौ, बार, तेत्तीस कोटि के मिलाप दिया । आप हरिवंश पात्र स्वामीजी भाव भक्ति सिद्ध करें । थाल, प्रसाद, निशानी, आतिथ्य, दशांश, सुक्तित दाम-दोकडा, पान, फुल, फल, अन्न-जल, सब्जी, फसल, भक्ति, उपासना को मान्य रखों । स्वामी आप पर बलिहारी जाउ । देव हमको आपकी आश है । अक्षयपात्र अखूट कर दो । स्वामी आप गत गंगा को उज्जवल कर दो । अन्नपूर्णा अन्न भरो । गणेशजी जल भरो । रिद्धि-सिद्धि प्रदान करो । माता भवानी, महादेव स्वामी भोजन परोसे, माता भवानी गयें ब्रह्माजी के पास । रिद्धि-सिद्धि प्रदान करो हम हे दास । हमारे भंडार भरपुर करो । सुखी बनो । अन्नदेव पूर्ण जालंधर मुखी ॥

सद्‌गुरु इमामशाह...

ॐ श्री निष्कलंकी नारायण नमो नमः ॥

• प्रसाद (भोजन) ग्रहण करने का मंत्र •

ॐ परम कृपालु परमात्माकी कृपासे प्रारंभ करता हूं ।

ॐ नमो श्री सद्‌गुरु पात्र ब्रह्मा इन्द्र इमामशाह ॥

आद्य विष्णु निरंजन निश्कलंकी नारायण आपकी आशिषसे...

स्वामी आप सृष्टि के सर्जनहार । थाल आतिथ्य आपके भाव-सुभाव से, आपके निमित्त से, आपके भोजनालयमें स्वीकार करो । अन्न-जल का आहार, पान-फूल के भोक्ता, सकल-संघ पर दयाकी दृष्टि रखो । आपका तेज प्रगट करो । सेवक के उपर दया की दृष्टि रखो । अनंत जीव तप करके आयें । अैसा वेद देव लोग प्रस्तुत कर रहे है । सद्‌गुरुने स्नेह किया । वह चतुर वेदी ब्रह्मा । स्वामी ! हक के दाने सेवामें लायें । जाका दाना, उद्यम करके प्राप्त किया । सच्चाई से लाना । प्रेम से पकाना ! संन्यासी ग्रहण करें, ब्रह्मार्पण करके ग्रहण करें । स्वामी ! आपको अर्पण करें ।

सद्‌गुरु इमामशाह महाराज

ॐ श्री निष्कलंकी नारायण नमो नमः ॥

• प्रसाद आरोगने के बाद का मंत्र •

ॐ परम कृपालु परमात्माकी कृपासे प्रारंभ करता हूं।

ॐ नमो श्री सद्‌गुरु पात्र ब्रह्मा इन्द्र इमामशाह ॥

आद्य विष्णु निरंजन निष्कलंकी नारायण आपकी आशिषसे...

एक गुणा दान। सहस्त्र गुणा पुण्य। अंत समय पर सेवककी रक्षा करना। विश्वास अखंड रखना। धर्म के मार्ग में रखना। स्वामी ! सहाय करना। जो भंडार से रोजी मिले वह भंडार भरपूर करना। स्वामी ! आपका प्रसाद, आपने दिया। सेवकने ग्रहण किया। प्रकाश हुआ। स्वामी आपको पहुंचाया।

सद्‌गुरु इमामशाह महाराज

ॐ श्री निष्कलंकी नारायण नमो नमः

• चंद्र दर्शन का मंत्र •

ॐ परम् कृपालु परमात्माकी कृपासे प्रारंभ करता हूं ।

ॐ नमो श्री सद्‌गुरु पात्र ब्रह्मा इन्द्र इमामशाह ॥

आद्य विष्णु निरंजन निष्कलंकी नारायण आपकी आशिषसे...

दया, क्षमा, शांति के वरदाता । मैं हुं अरजदार उम्मीदवार । आज है चंद्रमा गुरुजी ! आप सती जनों के सत् रखना । हमारी बिनती ध्यानमें रखो । स्मरण कि गई बात की सहायता करो । किये गये अपराध क्षमा करो । दूसरे अपराध मत करवाना । झांखा, मेघा, किन्नर, तेत्तीस कोटिका मिलन कराओ । अनंत कोटिके संगमें रखना । लक्ष्य चोर्यासीके फेरे मिटाना ।

सद्‌गुरु इमामशाह महाराज

ॐ श्री निष्कलंकी नारायणको नमो नमः

Shikhsapatri

• सद्गुरु की (शिखवण) शिक्षा •

सद्गुरुजी की शिखवण सच्ची ।
सुणो ऋषिवर बन अेकांति ॥ १
दिनभर करो सब अपना धंधा ।
शाम हुअे बनो प्रभु का बंदा ॥ २
किसीकी भी मत करना निंदा ।
जाकर कहना मंदिर में हे जंदा ॥ ३
गुरु मुखे आप कहो रे बंदा ।
ऋषिवर जनो की यही है संध्या ॥ ४
अैसी संध्या पूजो ऋषिवर भाई ।
छोडकर क्रोध करना नहीं इर्षाई ॥ ५
मन वशमें सो ममता मर जाई ।
धर्मशालामें कभी सोना मत भाई ॥ ६
धर्मशालामें दूजे की बात मत करना ।
ज्यादा खा कर पेट मत भरना ॥ ७
भरेंगे पेट तो प्रमादी बन जायेंगे ।
आयेगी निंद तो फीर पस्तायेंगे ॥ ८
कम खाने से सबकुछ मिलेगा ।
जागृतिसे जीतकर सद्गुरु पावेगा ॥ ९

बडे पूर्वजों की मर्यादा में रहना ।
अवगुण बडो का जरुर तुम सहना ॥ १०
बडा दिन एक बरस प्रमाणो ।
मीठें वचन बोलकर प्रेम ज आणो ॥ ११
अपने से जो छोटा है भाई ।
बडा समझकर कहो मेरे भाई ॥ १२
मीठे वचन तुम बोलो मेरे भाई ।
मुख पर झलकेंगे हीरे मेरे भाई ॥ १३
सद्गुरु मिलन का यह है भेद ।
ऋषिवरों के साथ न रखना खेद ॥ १४
अच्छा सुनकर बुरा आचरना ।
निश्चय ही भला कभी नहीं होगा ॥ १५
निद्राधीन बन, प्रमादी मत बनना ।
वेद वचन है, जुठे मत बनना ॥ १६
कुड कपट सब दिलसे निकालो ।
अमीरस पीकर पुण्य कमालो ॥ १७
जाकर घरसे धर्मशाला में आओ ।
निपाकर भाव-भक्ति से कुछ देकर लाओ ॥ १८

श्रद्धा से जो मिले वही तुम लाओ ।
पुजारी से मत बडपन दिखाओ ॥ १९
वादविवाद करें जो दुनियाको भाये ।
दरिद्री बने और न प्रभुको पावें ॥ २०
अधर्मी होकर हणियाचारी ।
सच न देखे जुठके वे प्रचारी ॥ २१
सुतकी बनकर अपवित्र जो रहेंगे ।
पीडा, दु:ख, विपत वो सहेंगे ॥ २२
अमीरस पाकर ले लो सुख प्राणी ।
गुरुजी कभी नहीं तजेंगे भाई ॥ २३
धर्मी लडना कभी नहीं जाने ।
अधर्मी मनमें अच्छा नहीं माने ॥ २४
ज्ञान-ध्यानमें शौच कर देखो ।
हानी न होवे वही संभालो ॥ २५
धरो ध्यान तुम करो स्वकरणी ।
गुप्त ज्ञान धरी, करो सुकरणी ॥ २६
चुस्त होकर गुण ग्रही लेना ।
ऋषिवर ! ग्रहण करो सो अे क्रिया ॥ २७

प्रथम हृदय निर्मल कर लेना ।
दुसरा है, स्नान करके खाना ॥२८
दिन रात सतमार्ग पर चलना ।
निश्चय सत वचन तुं वदना ॥२९
दया रखना दिल में तुं प्राणी ।
दान दे सुपात्रको जाणी ॥३०
पर दुःख पहचान कर मदद करना ।
बडे-सज्जनोंका सन्मान कर सही ॥३१
मनसे भी बडाई का गर्व मत करना ।
दसवी क्रिया है क्रोध मत करना ॥३२
धर्म करनेमें प्रमाद मत करना ।
सर्जनहारका ध्यान ही धरना ॥३३
नित-नित भक्तजनों को मिलना ।
संत, ज्ञानी, प्रभु भक्तिको पाना ॥३४
निशदिन अमीरस पीओ वो धर्मी ।
गर्व त्यजे वो नर कर्मी ॥३५
ऋषिवर झुठ कभी मत बोलो ।
अतिथि को अहर्निश सत्कारो ॥३६

भुखेको अन्न सदा तुं देना ।
प्यास प्यासे की बुझाते रहना ।। ३७

वस्त्रहीनको वस्त्र ही देना ।
सब साथी का कष्ट मिटाना । ३८

सब सहकर ध्यान ही धरना ।
अवगुण करने पर गुण ही करना । ३९

कम किसीको देना नहीं ।
बीना हक्क का लेना नहीं ।। ४०

पर स्त्री मात समाम है भाई ।
बुरी नजर से मत देखो भाई ।। ४१

जान-बुझ कर मत दो गवाही ।
कपट कभी मत करना भाई ।। ४२

मुख से बुरा कभी मत कहना ।
सुद लेने वालेंका अन्न कभी मत खाना ।। ४३

हाड मांस ग्रहण करना पातक ।
पशु पोष कर बेचना नहीं जातक । ४४

धरती हैं माता मूल्य मत करना ।
पुत्रीका धन ग्रहण मत करना ।। ४५

थोडीसी भी मत रिश्वत लेना ।
गलत पत्र कभी मत लिखना ॥ ४६
जाकर शौचालय शुद्ध होना ।
क्रिया मानकर पवित्र बनना । ४७
मिट्टी लेकर धोना हस्त ।
स्नान करके बनना पवित्र ॥ ४८
पाणी लेकर पिशाब करना ।
आचमन तीन सेवक तुं करना ॥ ४९
शुद्ध जल सदा तुं पीना ।
जीव हत्या कभी मत करना ॥ ५०
हींग तम्बाकु कभी न खाना ।
चीज नशीली कभी न लेना ॥ ५१
दनीमें बैठकर खाना नहीं ।
और झुठा भोजन मत खाना भाई ५२
निलके वस्त्र कभी पहनना नहीं ।
निचकी सोबत करना नहीं ॥ ५३
व्रतोपवास करके आश न रखना ।
पथ्थर जैसे की स्तुति न करना ॥ ५४

अमानत असतकी कभी न रखना ।
मिले अवसरको नहीं गवाना ॥ ५५

मोक्ष मार्ग का जपना जाप ।
बिना पूछे खाना है पाप ॥ ५६

थोडीसी भी घडी चूकना नहीं ।
ज्यादा भोजन खाना नहीं ॥ ५७

प्रीत न करना लालच आश ।
माता समान है बडी भोजाई ॥ ५८

दुश्मनी किसीसे करना नहीं ।
पडौसी को दुःख देना नहीं ॥ ५९

विश्वासघात बडा है पाप ।
पडी चीज मत लेना भाई ॥ ६०

कलंकित किसीको करना नहीं ।
कर्ज किसीका रखना नहीं ॥ ६१

धन पराया कभी मत लेना ।
बनकर पुत्र पडेगा देना ॥ ६२

अपशब्द कभी बोलना नहीं ।
मूर्ख बनकर रहना नहीं ॥ ६३

ज्ञानी सब सबदृष्टि से देखो ।
दुश्मन करें अैसा मत करो ॥ ६४
सच-झुठ का विवाद न करना ।
जुआ-जुगारमें कभी न पडना ॥ ६५
नाच-छंद भवाई देखना नहीं ।
वो देखे सद्गुरु खोना सही ॥ ६६
भोजन की न करना बुराइ ।
करो बखान न करो बुराई ॥ ६७
प्रात: स्नान करके निकलना ।
दुनिया करें अैसा मत करना ॥ ६८
तप तीर्थ और करना स्नान ।
निर्मल होकर धरना ध्यान ॥ ६९
अपने पशु को दु:ख न देना ।
प्रित दिवानों से कभी न करना ॥ ७०
चलते घुमते खाना नहीं ।
बुरे दृश्य कभी देखना नहीं ॥ ७१
लिखा वेदशास्त्रमें वही तुम करना ।
शुद्ध-बुद्धिसे हरदम रहना ॥ ७२

विष खा कर कभी न मरना ।
आवागमनके चक्करमें फिर पडना ॥ ७३
जोर जुवानी को वश में रखना ।
परस्त्रीका कभी संग न करना ॥ ७४
जुठा पाणी अग्निमें मत दालों ।
हरें वृक्ष कभी न काटो ॥ ७५
प्रात:कालमें मत तोडो फुल ।
पथ्थर पूजने से न मिलेगा मोक्ष ॥ ७६
मूंगे प्राणीकी हत्या मत करना ।
भोजन समय उठ-बैठ न करना । ७७
पशुको जुठन खिलाना नहीं ।
इज्जत किसीकी खोलना नहीं ॥ ७८
दूसरों की बात में दखल न करना ।
गुरु वचन को मुल न जाना ॥ ७९
पूछे कोई तो अच्छी शीख देना ।
माला लेकर हरि स्मरण ही करना ॥ ८०
ब्रह्मानी मिला पीओ अमीरस ।
पालन करो ऋषिवर सौ ही क्रिया ॥ ८१

नये भक्तको देखकर धर्म देना ।
सौ क्रियाकी जनेउ पहनाना ॥ ८२
बने बहमन ब्रह्माजी मिल गये ।
आवागमनके फेरे मिट गये ॥ ८३
सूनो ऋषिवर तुम यह ब्रह्मज्ञान ।
करना गतमें गंगास्नान ॥ ८४
ब्रह्मज्ञान, सद्‌गुरुजीको भायें ।
अडसठ तीरथ गुरु चरणमें आये ॥ ८५
सद्‌गुरु जो सबमें बैठे ।
ज्ञान-भाग्य से सद्‌गुरु को देखे ॥ ८६
ध्यान-ज्ञान में देखो विचारी ।
सृष्टि में है देव गुप्त अवतारी ॥ ८७
ऋषिवर हो जो रखते ज्ञान ।
निर्मल हो कर धरना ध्यान ॥ ८८
वशमें है मुनिवरके मन ।
करते कसोटी काया रतन ॥ ८९
कहे इमामशाह सुणो सब भाई ।
साथ बैठ सब रखो जुगताइ ॥ ९०

आद्य सद्‌गुरु तपस्वी कहलाये ।
वही तपस्वी जांबुद्विपमें आये ॥९१
देखो सद्‌गुरु जांबुद्विपमें आये ।
गुरुजन मिलकर गुण जो गाये ॥९२
जांबुद्विपमें सद्‌गुरु बिराजे ।
आश रखो तुम अमरापुर जाये ॥९३
ब्रह्मज्ञानसे वचन निभायें ।
अेक ध्यान से ऋषिवर भायें ॥९४
जिस रुपसे सद्‌गुरुजी होते सही ।
वो रुपका जाप जपना भाई ॥९५
झुककर करते रहो प्रणाम ।
जांबुद्विपमें सद्‌गुरुका मुकाम ॥९६
पूर्ण प्रेम से धर्म निभाओ ।
ऋषिवर तुम अमरापुर जाओ ॥९७
अमरापुर का अमरपद लेना ।
ऋषिवर साथ अमरगढ रहना ॥९८
अमर फलका भोजन तुम करना ।
अनंतकाल तक आयु तुम पाना ॥९९
सद्‌गुरु वचन अेकचितसे निभाना ।
कहते इमामशाह अमरापुर तुम पाना ॥१००

• आरती •

जय जगदीश

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे,
भक्तोंजनोंके संकट क्षणमें दूर करे....ॐ जय...
जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मनका...प्रभु. (२)
सुख संपत्ति घर आवे (२)कष्ट मिटे तनका...ॐ जय...
माता-पिता तुम मेरे, शरण ग्रहूँ किसकी ? प्रभु. (२)
तुम बिन और न दूजा (२) आश करुं मैं किसकी...ॐ जय...
तुम पुरण परमात्मा, तुम अंतरयामी. प्रभु. (२)
परब्रह्म परमेश्वर (२) तुम सबके स्वामी...ॐ जय...
तुम करुणाके सागर, तुम पालनकर्ता प्रभु. (२)
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता...ॐ जय...
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति. प्रभु. (२)
किस विध मिलूँ दयामय (२) तुमको मैं कुमति...ॐ जय...
दीन-बंधु, दुःख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे. प्रभु. (२)
अपने हाथ जुडाओ (२) द्वार खडा तेरे...ॐ जय...
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा. प्रभु. (२)
श्रद्धा भक्ति बढाओ (२) संतनकी सेवा...ॐ जय...

दशावतारकी आरती

जयदेव जयदेव, जय सद्‌गुरु स्वामी,
प्रभु जय सद्‌गुरु स्वामी.

आरती कीजे निष्कलंकी देवनी, अक्षयपदधामी ॥ जयदेव.
प्रथम मच्छ अवतार, मार्यो शंखासुर पापी, प्रभु मार्यो.
चार वेद लावीने दीधा, ब्रह्माने आपी ॥ जयदेव. (१)

बीजे कच्छ अवतार, पर्वत पीठ उपर धार्यो, प्रभु पर्वत.
सात समुद्र मंथन करीने, चौद रत्न काढ्या ॥ जयदेव. (२)

त्रीजे वराह अवतार, मार्यो हिरण्याक्ष पापी, प्रभु मार्यो.
दाढे ग्रही लइ आव्या वराह, अवनी उर स्थापी ॥ जयदेव. (३)

चौथे नरसिंह अवतार, मार्यो हिरण्यकश्यप भूप, प्रभु मार्यो.
नखे वधारी मार्यो पापी, लई नरसिंह रुप ॥ जयदेव. (४)

पांचमे महाबलीराय, देखी सुरनर देव कांपया, प्रभु देखी.
वामन रुप धरीने, बलीने पाताळे चांपया ॥ जयदेव. (५)

छठ्ठे परशुराम अवतार, परशु हाथोमां लीधी, प्रभु परशु.
सहस्रार्जुन मारीने पृथ्वी, नक्षत्री कीधी ॥ जयदेव. (६)

सातमे राम अवतार, आनंद कौशल्या पामी, प्रभु आनंद.
दशमुख रावण मार्यो, सीताना स्वामी ॥ जयदेव. (७)

आठमे कृष्ण-अवतार, गोविंद गोकुल गौचारी, प्रभु गोविंद.
मामा कंसने मार्यो, गोवर्धनधारी ॥ जयदेव. (८)

नवमे बुद्ध अवतार, भार पृथ्वी पर वाध्यो, प्रभु भार.
ध्यान धरी धरणीधर बेठा, योग युगत साध्यो ॥ जयदेव. (९)

दशमे निष्कलंकी अवतार, पृथ्वी निष्कलंकी करशे, प्रभु पृथ्वी.
दैत्यने मारी हरि, सुध सेवकनी लेशे ॥ जयदेव. (१०)

दश अवतारनी आरती, जे कोई गाशे, प्रभु जे कोई.
आरती बोल्या, सतगुरु ब्रह्मा, मोक्ष गति थाशे ॥ जयदेव. (११)

ॐ श्री निष्कलंकी नारायण भगवान की जय.
ॐ श्री सद्‌गुरु ईमामशाह महाराज की जय.
ॐ श्री सतपंथ सनातन धर्म की जय.
ॐ श्री जगद्‌गुरु नानकदासजी की जय.
अपने अपने गुरु महाराज की जय.

• श्लोक •

त्वमेव माता च पिता त्वमेव

त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव

त्वमेव सर्व मम् देव देवाय ॥

• भजन •

माता पितानी आज्ञा पाळे, चार पदार्थ पामे जो ने,
सामे आव्या दुःखने खाळे, कीर्ति जगमां पामे जो ने,
माता पिताना मुखथी नीकले, वेद वाणी जो ने,
सुणतां हृदय पुत्रनुं पीगळे; फरज साची जागे जो ने,
सार्थकता पुत्रनी एमां, जीवननो ए सार जो ने,
ईश्वर जाणे माता पितामां, थई जाय बेडो पार जो ने,
गुरु प्रतापे साचो पुत्र कहेवाय, वर्तन एवां राखे जो ने,
इतिहासे ए अमर थाशे, धडो बीजाने आपे जो ने.

• सवाल-जवाब •

१. सवाल : युग कितना है ? कौनसा कौनसा ?

जवाब : युग चार (१) सतयुग (कर्तायुग) (२) त्रेतायुग (३) द्वापरयुग (४) कलियुग ।

२. सवाल : चारों युगमें भगवानका कितना अवतार हुआ ? उसका नाम क्या ?

जवाब : चार युगमें भगवानका कुल दस अवतार हुआ । (१) श्री मच्छा अवतार (२) श्री कुर्म अवतार (३) श्री वराह अवतार (४) श्री नरसिंह अवतार (५) श्री वामन अवतार (६) श्री परशुराम अवतार (७) श्री राम अवतार (८) श्री कृष्ण अवतार (९) श्री बुद्ध अवतार (१०) ॐ श्री निष्कलंकी नारायण भगवानका अवतार होगा ।

३. सवाल : युगकी संख्या चार है और अवतारकी संख्या दस है । तो क्या चारों युगमें ढाई ढाई अवतार हुआ था ?

जवाब : पहला कर्तायुगमें चार अवतार हुआ । (१) श्री मच्छा अवतार (२) श्री कुर्म अवतार (३) श्री वराह अवतार (४) श्री नरसिंह अवतार ।

दूसरा त्रेतायुगमें तीन अवतार हुआ। (१) श्री वामन अवतार (२) श्री परशुराम अवतार (३) श्री राम अवतार।

तीसरे द्वापर युगमें दो अवतार हुआ। (१) श्री कृष्ण अवतार (२) श्री बुद्ध अवतार।

चोथा कलियुगमें - एक अवतार ॐ श्री निष्कलंकी नारायण भगवानका होगा।

४. सवाल : वेदो कितना और वेदोके नाम क्या है ?

जवाब : वेदो चार है। (१) ऋग्वेद (२) यर्जुवेद (३) शामवेद (४) अथर्ववेद

५. सवाल : वेदोके तत्वसार कितने ? कौन कौन ?

जवाब : वेदोके तत्वसार चार। (१) प्रज्ञानमानन्दम् ब्रह्म (२) अहंमब्रह्मास्मि (३) तत्त्वमसि (४) अयआत्मा ब्रह्म।

६. सवाल : क्या गुरुजी अपने धर्मको पीराणा धर्म कहा जाता है ?

जवाब : ना, वत्स, अपने धर्मको सतपंथ धर्म कहा जाता है। पीराणा धर्म नहि है, लेकिन वो गाँवका नाम है और वहाँ सतपंथ धर्मका

गुरुद्वारा आया है । उसको प्रेरणापीठ कहा जाता है ।

७. सवाल : सतपंथी किसीको कहा जाता है ?

जवाब : जो भक्तोने कर्तायुगमें श्री नरसिंह भगवानका, त्रेतायुगमें श्री राम भगवानका, द्वापर युगमें श्रीकृष्ण भगवानका पूजन किया, इसी तरह वर्तमान युगमें विष्णु भगवानका नौ अंशा अवतारोको वंदनीय मानकर और विष्णु भगवान का दसवा अंशा अवतार ॐ श्री निष्कलंकी नारायण भगवानके निमित्त भक्ति, उपासना, पूजन, प्रार्थना करे और अपनी अगली भूलोका प्रायश्चित करें उसको सतपंथी कहलाता है ।

८. सवाल : हम भगवान का कौनसा अवतारको मानते है ?

जवाब : हम श्री विष्णु भगवानका नौ अंशा अवतार को वंदनीय मानकर दसवा अंशा अवतार "ॐ श्री निष्कलंकी नारायण भगवान" को मानते है ।

९. सवाल : तो फिर भी इमामशाह महाराज कौन है ?

जवाब : श्री इमामशाह महाराज वर्तमान युगके स्वामीका

स्मरणके लिए भक्ति, पूजन, प्रार्थना करनेका सच्चा रास्ता (सतपंथ) धर्म दिखानेवाला सद्गोर श्री है ।

१०. सवाल : ॐ श्री निष्कलंकी नारायण ज्योति मंदिरमें पूजन किसका और किस तरह होता है ?

जवाब : ॐ श्री निष्कलंकी नारायण ज्योति मंदिरमें आद्य शक्तिकी अखंड ज्योत और कुंभ कलश वारियज्ञ पूजा के समय ब्रह्मा, विष्णु, महेशकी त्रिज्योति एक स्वरुपे प्रज्जवलित होती है और तैत्रीस कोटी देवोके पूजन होते है । पूजामें प्रसादके रुपमें शीरा, लापशी, खीर, रोटी, चूरमा, चीनी-घी, चावाल और फलफलादी देवोको समर्पित किया जाता है । और सुबह शाम ॐ श्री निष्कलंकी नारायण स्वरुपे ज्योति एवं ब्रह्मा, विष्णु और महेशको धूप-दीप चमरसे नोबत आरतीका तालके साथ गोर ब्रह्माजीने रची हुई आरती बोलकर आनंदोत्सव सहित पूजन-अर्चन होता है ।

• भजन •

ओ ईश्वर भजीए तने

ओह ! ईश्वर भजीए तने, मोटुं छे तुज नाम ।
गुण तारा नित्य गाइये, थाय अमारां काम ॥
हेत लावी हसाव तुं, सदा राख दिल साफ ।
भूल कदी करीए अमे, तो प्रभु करजो माफ ॥
परोढीए नित उठीने, लेवुं ईश्वर नाम ।
दातण करी नाह्या पछी, करवा पाठ तमाम ॥
कह्यं करो माबापनुं, दो मोटाने मान ।
गुरुने बाप समा गणो, मळशे सारु ज्ञान ॥
जूठुं कदी न बोलवुं, त्यजवुं आळस अंग ।
हलीमलीने चालवु, राखवो सारो संग ॥
चोख्खा घरनो ओटलो, चोख्खो घरनो चोक ।
चोख्खां कपडां जोईने, चोख्खुं कहे सौ लोक ॥
चोख्खु मारुं मुखडुं, चोख्खां मारा हाथ ।
चोख्खा मारा दिलमां, रहे जगतनो नाथ ॥

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥

श्री सतपंथ बाल-बालिका शिक्षण शिबिर

• प्रतिज्ञा पत्र •

(१) मैं हररोज सुबह प्रात:कालसे पहले उठुंगा ।
(२) हररोज सुबहकी क्रियाए पूरी करनेके बाद ज चाय-दूध लूंगा ।
(३) सुबह-शाम मंदिर में दर्शनार्थे जायेंगे और चंदन-तिलक करेंगे ।
(४) हररोज अमर मंत्रकी कमसे कम......माला करुंगा ।
(५) हररोज माता-पिताको नमस्कार करेंगे ।
(६) हर समय वडीलोको और अतिथिओको आदर दूंगा ।
(७) हर समय सत्य बोलुंगा ।
(८) कभी भी चोरी नहीं करुंगा ।
(९) कोई भी प्रकारका व्यसन नहीं करुंगा ।
(१०) सभी जीवमात्रके उपर दया भाव रखुंगा ।
(११) हर समय आज्ञाकित बनुंगा ।

शिबिरार्थीका नाम ______________________

पता ______________________

माननीय.....आपका पुत्र/पुत्रीने उपर दी गयी प्रतिज्ञाका पालन करनेका स्वीकार किया है, यदी इसमे कही भी (व्यवधान) हो जाये तो आप इसे मदद करे ।

पसंद किया गया नियमो के सामने (✓) का निशान करें ।

शिबिरार्थीकी दस्तक__________ वालीकी सही__________

पत्र व्यवहार : **सतपंथ बाल-बालिका शिक्षण शिबिर आयोजन समिति**
प्रेरणापीठ-पीराणा, तहसिल-दसक्रोई, डी. अहमदाबाद-३८२४२५.
सर्वसंमत होकर दस्कत करके प्रमाणपत्रकी नकलको भेजना ।



શ્રી મહેન્દ્ર વિરજીભાઈ પટેલ (ભાદાણી) ઉં. વર્ષ - ૪૮
કચ્છમાં દેશલપુર (ગુંતલી) નિવાસી
હાલ-કોલ્હાપુર (મહારાષ્ટ્ર)

જન્મ તા. ૧૬-૧૦-૧૯૬૨
અવસાન તા. ૨૨-૧૨-૨૦૧૦

માતા-પિતા : સ્વ. સૌ. જાનબાઈ વિરજીભાઈ લધારામ પટેલ (ભાદાણી)
મોટાભાઈ - ભાભી : સૌ. પાર્વતીબેન રામજીભાઈ વિરજીભાઈ પટેલ (ભાદાણી)
મોટાભાઈ - ભાભી : સૌ. વસુમતીબેન રવજીભાઈ વિરજીભાઈ પટેલ (ભાદાણી)
મોટાભાઈ - ભાભી : સૌ. પ્રભાવતીબેન મોહનભાઈ વિરજીભાઈ પટેલ (ભાદાણી)
ધર્મ પત્ની : ગં. સ્વ. શ્રીમતી શાંતાબેન મહેન્દ્રભાઈ વિરજીભાઈ પટેલ (ભાદાણી)
પુત્રી : સૌ. જયોતી અશ્વિનભાઈ પટેલ - નાસીક
પુત્રી : સૌ. જીજ્ઞા જીતેન્દ્રભાઈ પટેલ - હૈદ્રાબાદ
પુત્ર : પ્રશાંત મહેન્દ્રભાઈ પટેલ (ભાદાણી)
પુત્રી : કુ. મીનલ મહેન્દ્રભાઈ પટેલ (ભાદાણી)

: વ્યવસાયિક પ્રતિષ્ઠાન :
વિલસન્સ પાર્ટીકલ બોર્ડ ઈન્ડ્ર. લી. કોલ્હાપુર
વિલસન્સ રૂફીંગ પ્રોડક્ટ પ્રા.લી. કોલ્હાપુર

शुभ संज्ञाए

१. ॐकार	- परम वंदनीय है।
२.श्री इमामशाह महाराजकी वाणी	- अमर रहो।
३.फूलों से भी प्यारा है	- सतपंथ हमारा है।
४. श्री सतपंथ धर्म	- अखंड रहो।
५. अखंड ज्योति	- जलती रहो।
६. सफेद (श्वेत) ध्वजा	- सदा लहेराती रहो।
७. आत्मा आत्मा में नारा है	- निष्कलंकी नारायण हमारा है।
८. सतपंथी जनो	- सदा व्यसन मुक्त रहो।
९.सूर्य नारायणको	- नित्य नमस्कार करें।
१०. अेकता की झंखना	- अटूट रहे।
११. सतपंथी जनो	- निडर रहे।
१२. सुबह - साम सतपंथी जनो	- मंदिरमें आते रहो।
१३. सतपंथी सतपंथी	- भाई - भाई
१४. संस्कारी समाजका	- घडतर करे।
१५. करशनदाजी महाराज	- दिर्धायु हो।
१६ व्यशन मनुष्यका	- दुश्मन है।
१७. माता-पिताका	- आदर करे।
१८. साधु-संतोका	- जय जयकार हो।
१९ . ऋषि मुनिओका	- जय जयकार हो।
२०. भारत माताको	- समर्पित बनो।
२१. गौ माताकी	- रक्षा करे।
२२. सतकर्मको	- आगे बढाओ।
२३. दुष्कर्मसे	- दूर रहो।
२४. धर्मका	- जय हो।
२५. अधर्मका	- नाश हो।

ॐ श्री निष्कलंकी नारायण भगवानकी जय.
ॐ श्री सद्‌गुरुश्री ईमामशाह महाराजकी जय.
ॐ श्री सतपंथ सनातन धर्मकी जय.
ॐ श्री जगद्‌गुरु नानकदास महाराजकी जय.
ॐ श्री अपने अपने गुरु महाराजकी जय.